अभिव्यंजना

डॉ० संजय रमन

मेरे श्वासों से होकर प्रश्लेषित,
जो होते प्रभंजित अहसासों के उद्गार
मन के व्याकुल धरातल पर मेरे,
थिरकते शब्दों की अवचेतना है।

हरदम श्रृंगार हेतु लालायित,
ये काव्यानुराग से प्रवृत्त काव्य मेरे,
कुम्हलाए शब्दों के पुष्प, पराग, यायावर,
मेरे तृषित हृदय की अभिव्यंजना है।

अमूल्य प्रेम वर्णिकाओं में विश्लेषित होते,
मेरे विमुक्त, उच्छिन्न, तृप्त चिंतन,
काव्य पंक्तियों में परितुष्ट रहने को आतुर,
मेघ और चंद्रशाला की परिरंभना है।

होकर आस्था के जल से क्षालित,
नवरसों की अलंकृत प्रतिमाएँ,
हरितिम काव्य वाटिका के सुवर्ण पुष्प,
निर्गत हृदयभावों की परिकल्पना है।

हृदय के माया प्रपंच में गुंजित,
तरुणाई की नूपुर बाँधे,
मन के उद्यान के भ्रमर समस्त,
कल्पित स्वरों की मृगतृष्णा है।

*****